





महागव की अद्भुत झलक देखने को मिली। कार्यक्रम की शुरुआत पाहन रोहित उरांव द्वारा पूजा-अर्चना के बाद रावरी, हटिया और बोकरो से आए धर्मगुरुओं के सम्मान से हुई। सभा में उपस्थित धर्मगुरुओं ने अपने संबोधन में पवित्र जैस जल, जंगल, नदी, पहाड़ के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने ईश्वररूप प्रकृति को पूजनीय बताते हुए आदिवासी समाज को इसके संरक्षण के लिए तन-मन-बन से समर्पित रहने की प्रेरणा दी। सभा में समाज की भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाज, नेग-नियम, पूजा-पद्धति और शिक्षा के अभाव के कारण समाज को लेकर भी चर्चा हुई। समाज के आर्यो-आबा, सामाजिक अशुभाचार, पार्श्वभोरा, कोटवार, पड़ड़ा राजा और बुद्धिजीवी शुभचिंतकों ने समाज को एकजुट रखने पर जोर दिया और अपने विचार साझा किए। प्राचीन सभ में पहले धर्मगुरुओं और अतिथियों का स्वागत आदिवासी बालिकाओं ने परंपरिक पांच पखारने की रस्म के साथ 'जय धर्म' का उद्घोष कर किया। कार्यक्रम में आदिवासी परंपरागत वेशभूषा में सजी-संवरी बालिकाओं की उपस्थिति ने समाज की सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रदर्शन किया। सदन प्रार्थना सभा में पाहन रोहित उरांव, पानभरिया सोमनाथ उरांव, कोटवार सुमित्रा उरांव, पड़ड़ा सुमित्रा उरांव, चक्रवर्ती उरांव, पूजा उरांव, लतिका उरांव, सीमा उरांव सहित सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

















